PHILOSOPHY

PG III Sem. (Indian Logic)

उपाधि (~~अनुमान~~) (व्याप्ति)

Dr. S.K. Singh
Mob-9431449951

→ व्याप्ति की परिभाषा करते हुये कहा गया है कि दो वस्तुओं के बीच निकट, साहचर्य एवं ~~अनुपाधिक~~ निरुपाधिक संबंध व्याप्ति है।
'निरुपाधिक' अर्थात उपाधि रहित (Unconditional)

→ उपाधि के दो रूप हैं - शंकित और ~~आम~~ समारोपित अथवा निश्चित।

→ जिस उपाधि की साध्य-व्यापकता अथवा साधन-व्यापकता अथवा दोनों ही संदिग्ध हो वह उपाधि ~~कि~~ शंकित उपाधि है और जिस उपाधि के दोनों रूप निश्चित हो वह समारोपित उपाधि है।

• शंकित उपाधि के भी दो भेद हैं - योग्य और अयोग्य। इस प्रकार कुल तीन प्रकार की उपाधियाँ होती हैं - समारोपित, योग्य और अयोग्य।

→ व्याप्ति ग्रहण के क्रम में जब आरोपित उपाधि उपस्थित होती है तो वहाँ व्याप्ति ग्रहण असंभव होता है क्योंकि समारोपित उपाधि का निरास संभव नहीं होता। किन्तु यदि योग्य उपाधि उपस्थित हो तो उसका निराकरण तर्क के द्वारा किया जाना चाहिये। अयोग्य उपाधि का निराकरण अनावश्यक कहा गया है।

→ व्याप्ति का साधारण अर्थ है - 'फैला हुआ' अथवा 'व्याप्त होना'। इस प्रकार व्याप्ति ~~व्याप्त~~ व्याप्य-व्यापक संबंध की भी घोषणा करता है। व्याप्ति क्रिया द्वारा जिस विषय की सिद्धि की जाती है वह 'व्यापक' और जिसके द्वारा व्यापक सिद्ध किया जाता है,

Scanned with CamScanner

वह 'साध्य' कहलाता है, यथा - धूम्र को देखकर अग्नि की सिद्धि।

→ धूम्र से अग्नि को सिद्ध करने के लिये जब अनुमान किया जाता है तब यह बात अवश्य देखी जाती है कि धूम्र का अग्नि के साथ अटल संबंध है अथवा नहीं। क्योंकि जबतक यह निश्चित नहीं जान लिया जाता धूम्र अग्नि के अभाव में कहीं नहीं पाया जा सकता तब ही यह व्याप्ति कि 'जहाँ-जहाँ धुँआ है वहाँ-वहाँ आग है', स्थापित की जाती है।

इसके विपरीत जो वस्तु सिद्ध की जाती है उसका लिंग से उस प्रकार का संबंध होना अथवा न होना आवश्यक नहीं। जैसे- अग्नि को सिद्ध करते समय यह निश्चय आवश्यक नहीं कि 'जहाँ जहाँ अग्नि है वहाँ वहाँ धूम्र है'।

→ नियमत: जिसकी व्याप्ति रहती वह 'व्याप्य' तथा जिसमें व्याप्ति रहती है वह व्यापक कहलाता है; जैसे धूम्र अग्नि में व्याप्त रहता है अत: धूम्र 'व्याप्य' है और अग्नि 'व्यापक'। व्यापक और व्याप्य का प्रदेश समान नहीं होता। व्यापक (अग्नि) का प्रदेश व्याप्य (धूम्र) के प्रदेश से बड़ा होता है क्योंकि धूम्र के लिये अग्नि अनिवार्य है जबकि अग्नि के लिये धूम्र अनिवार्य नहीं। अग्नि के अभाव में धूम्र का भाव ~~संभ~~ संभव नहीं जबकि धूम्र के अभाव में भी अग्नि का भाव संभव है, यथा - तप्त लोहा में अग्नि)

Scanned with CamScanner